मात्र एक संदेश!

लेखक : डॉ. नाजी बिन इब्राहीम अल–अर्फज
अनुवादक : अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

islamhouse.com

1430–2009

अर्पण

- उन लोगों के नाम जो ईमानदारी और निष्ठापूर्वक सत्य के खोजी हैं।
- जो सचेत बुद्धि वाले हैं।

विषय सूचि

पढ़ने से पूर्व कुछ प्रश्न	4
मूल विषय	5
बाइबल (नया नियम) में अल्लाह का एकेश्वरवाद	19
बाइबल (पुराना नियम) में अल्लाह का एकेश्वरवाद	21
कुर्आन करीम में अल्लाह का एकेश्वरवाद	23
अन्त	25
अन्तिम विचार	34

पढ़ने से पूर्व कुछ प्रश्न :

१. इस मात्र एक संदेश का अभिप्राय क्या है?

२. इसके बारे में बाइबल का क्या कथन है?

३. इस विषय में कुर्‌आन क्या कहता है?

४. इसके बाद इस बारे में आप का क्या विचार है?

मूल विषय :

आदम अलैहिस्सलाम की उत्पत्ति के बाद, मानव इतिहास के अन्तराल में मनुष्यों को मात्र एक ही मूल संदेश समर्पित किया गया। लोगों को इस संदेश का स्मरण कराने और उन्हें सीधे मार्ग पर वापस लाने के लिए, एकमात्र सत्य पूज्य (अल्लाह) ने ईश्दूतों और पैग़म्बरों जैसे आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया और शांति अवतरित हो) को मात्र एक संदेश के प्रसार व प्रकाशन के लिए भेजा, वह संदेश यह है कि :

सत्य पूज्य मात्र एक है,

अतः तुम उसी की पूजा करो।

एकमात्र सत्य पूज्य (सृष्टिकर्ता) ने

भेजा :	इस संदेश के प्रसार के लिए कि:
नूह को	अल्लाह एक है।
इब्राहीम को	अल्लाह एक है।
मूसा को	अल्लाह एक है।
ईसा को	अल्लाह एक है।
मुहम्मद को	अल्लाह एक है।

अल्लाह तआला ने इन सुदृढ़ संकल्प वाले सन्देष्टाओं और इनके अतिरिक्त अन्य पैगम्बरों जिनमें से कुछ को हम जानते हैं और कुछ को नहीं, को कुछ कार्यों को अंजाम देने के लिए भेजा, जिन में से कुछ यह हैं :

१. अल्लाह के संदेश (वह्य) को प्राप्त करने और उसे अपनी समुदाय और मानने वालों तक पहुँचाने के लिए।

२. लोगों को तौहीद (एकेश्वरवाद) और हर प्रकार की उपासना अल्लाह के लिए विशिष्ट करने की शिक्षा देने के लिए।

३. अपने कर्म और कथन द्वारा लोगों के लिए एक अच्छा आदर्श प्रस्तुत करने के लिए, ताकि लोग अल्लाह के मार्ग पर चलने में उनका अनुसरण कर सकें।

४. अपने मानने वालों को अल्लाह से डरने, उसका आज्ञापालन करने और उसके आदेशों पर चलने का निर्देश देना और समझाना।

५. अपने मानने वालों को धर्म के आदेशों और शिष्टाचार की शिक्षा देना।

६. अवज्ञा करने वालों और अनेकेश्वरवादियों जैसे मूर्तिपूजकों आदि का मार्ग दर्शन करना।

७. लागों को इस बात से अवगत कराना कि वो मरने के बाद पुनः जीवित किए जायेंगे, और निकट ही क़ियामत के दिन उनके कामों का हिसाब लिया जाए गा। अतः जो आदमी एकमात्र अल्लाह पर ईमान लाया और सत्कर्म किया उसका बदला स्वर्ग है, और जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया और अवज्ञा किया तो उसका ठिकाना नर्क है।

इन संदेष्टाओं और ईश्दूतों को मात्र एक पूज्य (अल्लाह) ने पैदा किया और भेजा है। ब्रह्माण्ड और इसके भीतर जो भी प्राणी (जीव-जन्तु) हैं, सभी सृष्टिकर्त्ता और रचयिता अल्लाह के अस्तित्व का जीता जागता सबूत हैं और उसकी वह्दानीयत (एकता) की गवाही देते हैं। अल्लाह तआला ही संसार और उसके अन्दर जो मानव, चौपाये और कीड़े-मकूड़े हैं उन सब का पैदा करने वाला है, और वही मौत तथा नश्वर जीवन और अनन्त जीवन का पैदा करने वाला है।

यहूदियों, ईसाईयों और मुसलमानों के निकट पवित्र ग्रंथ सभी अल्लाह के अस्तित्व और उसके एकेश्वरवाद के साक्षी हैं (गवाही देते हैं)।

सत्य का खोजकर्ता यदि निष्पक्षता और ईमानदारी से बाइबल और क़ुरआन करीम में पूज्य के अर्थ का

अध्ययन करे तो वह उन अद्वितीय गुणों की पहचान कर सकता है जो अल्लाह के लिए विशिष्ट हैं, और उनमें उसके अतिरिक्त कथित देवता उसके तनिक भी साझी नहीं हैं। उन गुणों में से कुछ निम्नलिखित हैं :

१. सत्य पूज्य सृष्टिकर्त्ता, रचयिता और पैदा करने वाला है, वह पैदा नहीं किया गया है।

२. सत्य पूज्य मात्र एक है उसका कोई साझी नहीं, न ही वह अनेक है, और न वह किसी का बाप है और न ही उसका कोई पुत्र है।

३. अल्लाह सृष्टि (मख़्लूक़) की कल्पनाओं से पवित्र और परे है, इस दुनिया में निगाहें उसे नहीं देख सकतीं।

४. अल्लाह सार्वकालिक (अज़ली) है, वह न मरता है, न परिवर्तित होता और न वह किसी चीज़ के अन्दर घुला-मिला है और न ही वह अपने प्राणियों

(मख़्लूक़) में से किसी का शरीर धारण करता या उसके रूप में प्रकट होता है।

५. अल्लाह तआला निस्पृह, स्वतः स्थिर है, अपनी सृष्टि से बेनियाज़ है, उनका मुह्ताज (ज़रूरतमंद) नहीं है, न तो उसका कोई पिता है न माता, न कोई पत्नी है न पुत्र, उसे खाने, या पीने, या किसी की सहायता की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती है। किन्तु वो प्राणी जिन्हें अल्लाह ने पैदा किया है वो उसके ज़रूरतमंद और मुह्ताज हैं।

६. अल्लाह अपने प्रताप, गौरव, पूर्णता और प्रवीणता तथा सुन्दरता के गुणों में अनुपम और अद्वितीय है, उनमें उसका कोई भी साझी नहीं और न ही उनमें कोई उसके समान है। अतः उसके समान और सदृश कोई भी चीज़ नहीं है।

हम इन मानदण्डों और गुणों (और इनके अतिरिक्त अल्लाह के अन्य विशिष्ट और अद्वितीय गुणों) को

किसी भी कथित और कल्पित पूज्य को अस्वीकारने और खण्डन करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

अब मैं उपर्युक्त एक संदेश की चर्चा की तरफ लौटता हूँ, ताकि मैं बाइबल और कुर्आन करीम के हवालों से कुछ प्रमाणों (दलीलों) को प्रस्तुत करूँ जो अल्लाह की वह्दानीयत (एकेश्वरवाद) को सुनिश्चित और प्रमाणित करते हैं। किन्तु इस से पहले मैं आप के साथ इस विचार को बांटना चाहता हूँ कि :

कुछ ईसाई लोग आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछ सकते हैं कि : यह बात स्पष्ट है कि अल्लाह (पूज्य) एक है और हम एक पूज्य पर विश्वास रखते हैं, तो फिर समस्या क्या है?

वास्तविकता यह है कि ईसाई धर्म के विषय में ढेर सारी सामग्रियों के पढ़ने और गहन अध्ययन करने तथा ईसाईयों के साथ अधिक वार्ता और बातचीत करने के उपरान्त मैं ने यह पाया है कि उनके निकट ''अल्लाह'' (जैसाकि उनमें से कुछ लोगों का विचार है) निम्नलिखित चीज़ों को सम्मिलित है :

१. अल्लाह पिता।

२. अल्लाह पुत्र।

३. अल्लाह रूहुल-क़ुदुस (पवित्र-आत्मा)।

सामान्य बोध और शुद्ध तर्क एक निष्पक्ष सत्य के खोजकर्ता से इस बात का आह्वान करते हैं कि वह इन ईसाईयों से प्रश्न करे कि :

❖ तुम्हारे कथन कि ''अल्लाह एक है'' का क्या अर्थ है जबकि तुम तीन पूज्यों की ओर संकेत करते हो?

❖ क्या अल्लाह एक है जो तीन में घुल-मिल गया है या तीन है जो एक में घुला-मिला है। (तीन में एक है या एक में तीन)?

इसके अतिरिक्त, कुछ ईसाई मतों और मान्यताओं के अनुसार इन तीन पूज्यों के विभिन्न कर्तव्य (पद), अस्तित्व और रूप हैं जो इस प्रकार हैं :

१. अल्लाह पिता = सृष्टिकर्त्ता और रचयिता

२. अल्लाह पुत्र = मुक्ति प्रदान करने वाला

३. अल्लाह रूहुल-कुद्‌स (पवित्र-आत्मा) = सलाहकार (रक्षक और हिमायती)

यह भ्रम कि ईसा मसीह अल्लाह का बेटा, या स्वयं ईश्वर या ईश्वर (अल्लाह) का एक भाग हैं, पूर्ण रूप से उस बात के विरूद्ध है जिसे तौरात और इंजील ने प्रमाणित किया है कि न तो कोई अल्लाह को देख सकता है और न ही उसकी आवाज़ सुन सकता है :

“तुम लोगों ने उसका वचन कभी नहीं सुना और न तुम ने उसका रूप देखा है।” (इंजील यूहन्ना ५:३७)

“उसे न किसी ने देखा है, न कोई देख सकता है।” (1 तीमुथियुस ६:१६)

“कोई भी व्यक्ति मुझे देख नहीं सकता और यदि देख ले तो जीवित नहीं रह सकता है।” (निर्गमन ३३:२०)

मैं इन कथनों (सूत्रों और श्लोकों) और इनके अतिरिक्त बाइबल के अन्य कथनों के आधार पर आश्चर्य प्रकट करते हुए पूरी सच्चाई और ईमानदारी से यह पूछता हूँ कि जो लोग यह कहते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम ही अल्लाह (पूज्य) हैं और बाइबल के उन सूत्रों के बीच जो इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिस ने अल्लाह को देखा हो या उसकी आवाज़ सुनी हो, इन दोनों विपरीत बातों के बीच अनरूपता (तालमेल) कैसे पैदा करें गे?!

❖ क्या उस समय यहूदियों, ईसा के परिवारजनों और उनके मानने वालों ने ईसा मसीह (कुछ ईसाईयों के गुमान के अनुसार अल्लाह पुत्र) को नहीं देखा और उनकी आवाज़ नहीं सुनी?

❖ यह कैसे हो सकता है कि तौरात और इन्जील तो इस बात को सुनिश्चित और प्रमाणित करते हैं कि अल्लाह को न कोई देख सकता है और न उसकी आवाज़ सुन सकता है, फिर हम ऐसे व्यक्ति को पाते हैं जो यह आस्था रखता है कि वह ईसा जिसके व्यक्तित्व को उन्हों ने देखा और उसकी आवाज़ सुनी है, वही अल्लाह या अल्लाह का बेटा है?

क्या अल्लाह की वास्तविकता से संबंधित कोई गुप्त रहस्य और भेद है?

तौरात तो बिल्कुल इस के विपरीत बात को ज़ोर देकर स्पष्ट करता है, चुनाँचि अल्लाह के विषय में उसके कथन का उल्लेख करता है : ‘‘मैं यहोवा हूँ। मेरे सिवा कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है। मैं ने अकेले ये बातें नहीं कीं। मैं ने मुक्त भाव से कहा है। संसार के किसी भी अन्धेरे में मैं अपने वचन नहीं छुपाता। ... मैं परमेश्वर हूँ, और मैं सत्य बोलता हूँ। मैं वही बातें कहता हूँ जो सत्य हैं।’’ (यशायाह ४५:१८-१९)

अतः वास्तविकता क्या है?

कृप्या बाइबल के पिछले कथन को कई बार पढ़िए और देर तक उस में मनन चिंतन कीजिए।

आईये, अब हम एक साथ बाइबल और कुरआन करीम में अल्लाह (परमेश्वर) की वास्तविकता के बारे में खोज करें। आशा है कि आप इन आयतों और मूलग्रंथें (सूत्रों) में पूर्वविचार करने तथा इस पुस्तिका का न्याय्य, निष्पक्ष और आलोचनात्मक अध्ययन करने के बाद अपने विचारों और और दृष्टिकोण से मुझे अवगत करायें गे।

निष्पक्षता को ध्यान में रखते हुए, मैं बिना किसी टिप्पणी के प्रमाणों को प्रस्तुत कर रहा हूँ, आशा है कि आप ध्यानपूर्वक और निष्पक्षता के साथ बिना किसी पूर्व धारणा या पहले से कोई राय बनाए हुए उनमें मनन चिंतन करेंगे।

बाइबल (पुराना नियम) में एक सत्य पूज्य (अल्लाह):

- ''इस्राएल के लोगो, ध्यान से सुनो! यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक है। (व्यवस्था विवरण 6:4)
- ''ताकि तू समझ ले कि 'वह मैं ही हूँ' और मुझ में श्विास करे। मैं सच्चा परमेश्वर हूँ। मुझ से पहले कोई परमेश्वर नहीं था और मेरे बाद भी कोई परमेश्वर नहीं होगा। मैं स्वयं ही यहोवा हूँ। मेरे अतिरिक्त और कोई उद्धारकर्ता नहीं है, बस केवल मैं ही हूँ।'' (यशायाह 43:10–11)

❖ ‘‘परमेश्वर केवल मैं ही हूँ। अन्य कोई परमेश्वर नहीं है। मैं ही आदि हूँ। मैं ही अंत हूँ। मेरे जैसा परमेश्वर कोई और नहीं है।’’ (यशायाह 44:6)

❖ ‘‘मैं ही एक मात्र यहोवा हूँ। मेरे अतिरिक्त कोई और परमेश्वर नहीं है। क्या ऐसा कोई और है जो अपने लोगों की रक्षा करता है? नहीं, ऐसा कोई परमेश्वर नहीं है।’’ (यशायाह 45:21)

क्या आप को इनके समान अन्य वाक्य (श्लोक) भी स्मरण हैं?

बाइबल (नया नियम) में एक सत्य पूज्य (अल्लाह):

- ''अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर और यीशू मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें।'' (यूहन्ना 17:3)
- ''अपने प्रभु परमेश्वर (अल्लाह) की उपासना कर, और केवल उसी की सेवा कर।'' (मत्ती 4:10)
- हे इस्राएल, सुन! केवल हमारा परमेश्वर ही एक मात्र प्रभु है ... परमेश्वर एक है और उसके अलावा और कोई दूसरा नहीं है।'' (मरकुस 12:28–33)

❖ क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में मध्यस्थ भी एक ही। वह स्वयं एक मनुष्य है, मसीह यीशु। (1 तीमुथियुस 2:5)

❖ एक व्यक्ति यीशु के पास आया और बोलाः ''गुरू, अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या अच्छा काम करना चाहिये?'' यीशु ने उस से कहा, ''अच्छा क्या है, इसके बारे में तू मुझ से क्यों पूछ रहा? क्योंकि अच्छा तो केवल एक ही है!'' (मत्ती 19:16–17)

क्या आप अन्य ऐसे वाक्य स्मरण कर सकते हैं जो सुनिश्चित करते हैं कि अल्लाह एक ही है।? (तीन नहीं है!)

कुर्आन करीम में एक सत्य पूज्य (अल्लाह) :

- ''(आप) कह दीजिए कि वह अल्लाह एक (ही) है। अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है। न उस से कोई पैदा हुआ और न उसे किसी ने पैदा किया। और न कोई उसका समकक्ष है।'' (कुर्आन– 113:1–4)
- ''मेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, अतः तुम मेरी ही उपासना करो।'' (कुर्आन– 21:25)
- ''वो लोग भी पूरी तरह से काफिर (अधर्मी) हो गये जिन्हों ने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है। वास्तव में अल्लाह के सिवा

कोई सच्चा पूज्य नहीं, और अगर यह लोग अपने क़ौल से न रूके तो उन में से जो कुफ्र में रहेंगे उन्हें कष्टदायक अज़ाब अवश्य पहुँचेगा।'' (कुर्आन– 5:73)

- ''निःसन्देह तुम सब का पूज्य एक ही है।'' (कुर्आन– 37:4)
- ''क्या अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य भी है? कह दीजिए कि अगर तुम सच्चे हो तो अपना प्रमाण लाओ।'' (कुर्आन–27:64)

वास्तकिवता यह है कि (अल्लाह के एकेश्वरवाद) का संदेश ही कुर्आन करीम का मूल विषय है।

अन्त

बाइबल और कुर्आन करीम के उपर्युक्त कथन (आयतें) और उनके अतिरिक्त अन्य सैंकड़ों प्रमाण, इस बात को इस तरह सुनिश्चित करते हैं कि कोई सन्देह नहीं रह जाता, कि अल्लाह एक है उसके सिवा कोई दूसरा पूज्य नहीं है, जैसाकि बाइबल का कथन है : **"हे इस्राएल, सुन! केवल हमारा परमेश्वर ही एक मात्र प्रभु है ... परमेश्वर एक है और उसके अलावा और कोई दूसरा नहीं है।"** (मरकुस 12:28–33)

और कुर्आन करीम इसी बात को अल्लाह के इस कथन में चर्चा करता है : **"(आप) कह दीजिए कि वह अल्लाह एक (ही) है।"** (कुर्आन– 113:1–4)

बाइबल केवल इसी बात को सुनिश्चित नहीं करता है कि अल्लाह एक है, बल्कि इस बात को भी सुनिश्चित करता है

कि अल्लाह ही रचयिता (सृष्टिकर्त्ता) और एकमात्र मुक्ति देने वाला है : ''**ताकि तू समझ ले कि 'वह मैं ही हूँ' और मुझ में श्विास करे। मैं सच्चा परमेश्वर हूँ। मुझ से पहले कोई परमेश्वर नहीं था और मेरे बाद भी कोई परमेश्वर नहीं होगा। मैं स्वयं ही यहोवा हूँ। मेरे अतिरिक्त और कोई उद्धारकर्ता नहीं है, बस केवल मैं ही हूँ।**''

(यशायाह 43:10–11)

इस से स्पष्ट हो जाता है कि ईसा या रूहुल-क़ुदुस (पवित्र आत्मा) या इनके अलावा किसी अन्य की ईश्वरत्व की बात कहने की कोई सनद और प्रमाण नहीं है, वो लोग मात्र अल्लाह की सृष्टि हैं जिन्हें उसने पैदा किया है, वो किसी भी चीज़ का अधिकार नहीं रखते हैं। अतः वो न तो ईश्वर (पूज्य) हैं और न ही अल्लाह का प्रदर्शन, या स्वरूप प्रकाश या समानरूप हैं, क्योंकि अल्लाह के समान कोई चीज़ नहीं

है जैसाकि बाइबल और क़ुरआन करीम ने उल्लेख किया है।

अल्लाह तआला ने यहूदियों पर उनके पथभ्रष्ट हो जाने और अल्लाह के सिवा अन्य देवताओं की पूजा करने के कारण अपना क्रोध प्रकट किया है : ''**यहोवा इन लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ।**'' (गिनती 25:3)

तथा मूसा अलैहिस्सलाम ने उनके सोने के बछड़े को तोड़-फोड़ डाला।

दूसरी ओर, ईसाईयों के एकेश्वरवादी दल को अत्याचार और उत्पीड़न सहना पड़ा क्योंकि उसने अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) पर विश्वास किया और ईसा (यीशु) अलैहिस्सलाम की, एकेश्वरवाद की शिक्षाओं में परिवर्तन करने से मना कर दिया और पौलुस और उसके साथियों के हाथों उभरने वाले त्रिदेव की नवरीति को नकार दिया।

सारांश यह है कि अल्लाह तआला ने आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा, मुहम्मद और अन्य सभी सन्देष्टाओं और ईश्दूतों (उन सभी पर अल्लाह की शांति और कृपा अवतरित हो) को इस लिए भेजा ताकि वो लोगों को अल्लाह पर विश्वास रखने और हर प्रकार की उपासना को केवल उसी के लिए विशिष्ट करने की दावत दें जिसका कोई साझी और समकक्ष नहीं। अतः उन सब का मात्र एक संदेश यही था कि :

सत्य पूज्य मात्र एक है, अतः केवल उसी की उपासना करो।

जब ईश्दूतों और सन्देष्टाओं का संदेश एक ही है, तो उनका धर्म भी एक हुआ। अतः प्रश्न उठता है कि इन ईश्दूतों और सन्देष्टाओं का धर्म क्या है?

उनके संदेश का सार अल्लाह की इच्छा के प्रति 'समर्पण करने' पर आधारित है, जिसका अरबी भाषा में अर्थ होता है 'इस्लाम'।

तथा कुरआन करीम ने इस बात को सुनिश्चित किया है कि अल्लाह के सभी सन्देष्टाओं और ईश्दूतों का सत्य धर्म इस्लाम ही था। कुरआन की इस वास्तविकता की खोज हम बाइबल में भी कर सकते हैं। (यदि अल्लाह ने चाहा, तो बाइबल में इस वास्तविकता की खोज, हम अपनी अगली पुस्तिका में करेंगे।)

अन्त में, मोक्ष प्राप्त करने के लिए हमारे ऊपर इस संदेश को स्वीकारना तथा सच्चाई और ईमानदारी के साथ इस पर विश्वास रखना अनिवार्य है। किन्तु केवल इतना ही काफी नहीं है! बल्कि अल्लाह के सभी ईश्दूतों और सन्देष्टाओं पर विश्वास रखना (जिन में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर विश्वास रखना भी सम्मिलित है।) और उनके मार्गदर्शन पर चलना और उस पर कार्यरत होना भी हमारे ऊपर अनिवार्य है। यही सौभाग्यशाली अनन्त जीवन का मार्ग है।

अतः ऐ ईमानदारी से सत्य के खोजकर्ता और मुक्ति के अभिलाषी! तुझे इस मामले में विचार करना चाहिए और आज ही इसमें मनन चिंतन करना चाहिए, इस से पहले कि अवसर हाथ से निकल जाए। उस मौत के चंगुल में फँसने से पहले जिसका प्रहार अचानक ही होता है! किसे पता कि मौत का बुलावा कब आ जाए?

इस महत्वपूर्ण और निर्णायक मामले में सोच विचार और पुनः मनन चिंतन करने के बाद, आप सचेत बुद्धि और सच्चे दिल से यह निर्णय कर सकते हैं कि अल्लाह एक है उसका कोई साझी नहीं और न कोई उसकी संतान है, तथा आप उस पर ईमान ले आयें और केवल उसी की उपासना करें, तथा इस बात पर भी ईमान लायें कि नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा के समान मुहम्मद एक ईश्दूत और संदेष्टा हैं।

❖ और अब आप -यदि चाहें तो- इन शब्दों को अपनी जुबान से बोलें :

'अश्हदो अन्–ला–इलाहा इल्लल्लाह,
व–अश्हदो अन्ना मुहम्मदन् रसूलुल्लाह'

अर्थात् : मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के सन्देष्टा (पैग़म्बर) हैं।

यह शहादत (गवाही) सौभाग्यपूर्ण अनन्त जीवन की ओर मार्ग पर पहला व्यावहारिक क़दम है, और यही स्वर्ग के द्वार की वास्तविक कुंजी है।

यदि आप ने इस्लाम के मार्ग को अपनाने का मन बना लिया है, तो आप अपने मुसलमान दोस्त या पड़ोसी, या निकट्तम मस्जिद या इस्लामी कार्यालय की सहायता ले सकते हैं, या आप स्वयं मुझ से संपर्क साधें या पत्र लिखें (यह मेरा सौभाग्य होगा)।

‘‘आप कह दीजिए कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्हों ने अपनी जानों पर अत्याचार किये हैं तुम अल्लाह की दया से निराश न हो। निःसन्देह अल्लाह सभी पापों को क्षमा कर देता है, वास्तव में वह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान् है। और तुम सब अपने रब (परमेश्वर) की ओर झुक जाओ और उसका आज्ञापालन किये जाओ, इस से पहले कि तुम्हारे पास अज़ाब आ जाए फिर तुम्हारी मदद न की जाये। और तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारी तरफ जो सब से अच्छी बात उतारी गई है उसकी पैरवी करो, इससे पहले कि अचानक तुम पर अज़ाब आ जाए और तुम्हें पता भी न चले। (कुर्आन– 39:53–55)

तथा एक दूसरी चीज़ भी है ...

अन्तिम विचार :

समझ–बूझ और दूरदर्शिता के साथ इस एक संदेश को पढ़ने बाद, सच्चे और गंभीर लोग पूछ सकते हैं :

- वास्तविकता क्या है?
- गलती क्या है?
- क्या करना चाहिए?

यदि अल्लाह ने चाहा तो इन प्रश्नों और इनके अतिरिक्त अन्य प्रश्नों पर अपनी अगली लेखनियों में बहस करूँगा।

अतिरिक्त जानकारी, या प्रश्न, या सुझाव के लिए निम्नलिखित पते पर लेखक से संपर्क करने में संकोच न करें :

पोस्ट बाक्स नं.: 418 – हफ़ूफ़

अह्सा–31982 सऊदी अरब

abctruth@hotmail.com

info@abctruth.com

अनुवादक

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*

*atazia75@gmail.com